

adj. comp. f. घ्रा. °वाग्बुद्धिसात्रप्य M. 4, 18. वेषाभरणसंशुद्धा: (स्त्रियः) 7, 219. अलिङ्गी लिङ्गिवेषेण यो वृत्तिमुपजीवति 4, 200. JĀG. 1, 123. स्वतु-
ल्यवेषालंकार RĀGĀ-TAR. 6, 152. PRAB. 47, 4. वेषं सान्निध्याय रक्तेनै-
केन वाससा MBH. 1, 7719. स्त्रीणां प्रियालोकफलो हि वेषः KUMĀRAS. 7, 22.
पश्चात्तापसदृश° ÇĀK. 80, 6. वेषाभानुकरणं न कुर्यात्पृथिवीपते: Spr. 5037.
वाग्वेषचेष्टितै: DAÇAR. 2, 46. BHAR. NĀTJAC. 34, 85. Suçr. 1, 104, 16 (pl.).
वेषोपचारकुशल SĀH. D. 78. नरदेवो ऽसि वेषेण नटवत्कर्मणाद्विज्ञः BHĀG.
P. 1, 17, 5. बलं वेष्टय वेष्टयानाम् BRAHMAVAIV. P. im ÇKDr. u. बल. °प-
रिवर्तनं विधाय PAÑĀT. 169, 15. °विपर्यय 37, 3. °च्छन्न KATHĀS. 38, 74. °प्र-
च्छन्न 12, 58. कृत्वा वेष्टं च सैरन्ध्या: nahm die Tracht — an, kleidete sich als
MBH. 4, 246. गोपानां कृत्वा वेष्टमनुत्तमम् 280. KATHĀS. 29, 99, 27, 196. राजपुत्र-
स्य वेषेण तस्थौ ग्रामे 24, 90. कैरातं वेषमास्थाय MBH. 3, 1552. नानावेषधै-
र्भूतै: 1551. किरातवेषसंज्ञं 1555. समानव्रतवेषा 1554. नर्तन° 1874. HA-
RIV. 8694. धार्य° R. 1, 7, 6. मुनि° 4, 2, 9, 9, 48, 17, 2, 23, 14, 39, 1, 104, 28.
गोप° MEGH. 13. प्रवासस्थकलत्रवेषा RAGH. 16, 4. MĀLAV. 13. Spr. (II)
1634. उदीच्य° VARĀH. BRH. S. 38, 46. KATHĀS. 13, 146. वणिग्वेषं चकार
स: 179, 12, 168, 27, 197, 29, 102, 43, 172. कार्पटिकवेषभूत् 38, 18. RĀGĀ-
TAR. 3, 267. योषिद्वेषो मया कृतः BHĀG. P. 8, 12, 15, 47. पुरुषवेषा KATHĀS.
27, 198. तरुणीवेषा (प्रावृष्) Spr. (II) 2503. उन्मत्त° MBH. 3, 2582. KA-
THĀS. 12, 57. हीनान्नवस्त्रवेषः स्यात् M. 2, 194. चारु° R. 2, 114, 13. श्र-
द्धानुष्ठितचारुवेषा RAGH. 14, 13. मनोऽन्त° 6, 1. शुद्ध° 1, 46. मरु° KA-
THĀS. 4, 49. यो नोद्धतं कुरुते ज्ञातु वेष्टम् Spr. 4907. अनुद्धत° Suçr. 1, 30,
2. विनीतवेषाभरण M. 8, 2. ÇĀK. 8, 12. VARĀH. BRH. S. 2, S. 3, Z. 10. स्व-
भावदुर्गन्धिबीभत्सवेषा PRAB. 71, 1. कश्मल° Dhūrtas. 73, 11. विधूत R.
5, 16, 21. श्रवधूत und श्रवधूत° BHĀG. P. 6, 13, 10, 4, 19, 25, 3, 1, 19, 5, 3,
29, 6, 6. नद्यो विकृतवेषाम् KATHĀS. 12, 173. तण° beim Schauspieler
MAITRĪJUP. 4, 2. कृतभिरणवेषा VIKR. 40, 17. कृतकौतुकमङ्गलवेषा PAÑ-
ĀT. 129, 17. प्रङ्गारवेषा MBH. 3, 237. मृगया° ÇĀK. 24, 15. ein angenom-
menes Aeusseres: वेष्टं विधा eine fremde (andere) Gestalt annehmen
BHĀG. P. 2, 7, 37. वेष्टं गम् dass. 5, 20, 41. Aussehen überh. R. 3, 73, 15.
गो° einem Stiere gleichend MBH. 4, 588. अस्त्रानि चैव सन्नानि वेशेस्ते-
स्ते: पृथग्विधै: HARIV. 11798. सतां वेषधर: R. 4, 16, 17. fg. अर्थं धर्मवेषेण
2, 118, 6. वेष्टमाच्छाद्य so v. a. sich nicht zu erkennen gebend TBR. Comm.
1, 124, 3 v. u. प्रच्छन्नवेषेण dass. 129, 3. वेष am Anf. eines comp. als
Ausdruck des Lobes (!) im gaṇa काष्ठादि zu P. 1, 8, 67 gehört vielleicht
hierher. Als n. PAÑĀR. 1, 14, 56. Das Wort wird häufig, aber äusserst
selten in den Bomb. Ausg., mit श geschrieben. Vgl. कृतवेष, केश°
(Haartracht ĀÇV. GRHJ. 1, 17, 18. °वेषान् v. 1.), पुं°, प्राग्वेष, भूतवेषो,
राजवेष, विवाह°, सु°.

2. वेष्ट (wie eben) adj. wirkend, besorgend VS. S. 38, 2 v. u.

3. वेष्ट m. fehlerhafte Schreibart für वेश BHAR. zu AK. 2, 2, 1 nach ÇKDr.

वेषकार (1. वेष्ट + कार) m. als Erkl. von वेष्टन TRIK. 3, 3, 261.

वेषण (von 1. विष्) 1) n. Besorgung, Dienst: परिविष्टी वेषणा दंस-
नाभि: RV. 4, 33, 2. अवे स्म यस्य वेष्टणे स्वेदं पथिषु जुह्वति 5, 7, 5. — 2)
m. Cassia Sophora Lin. HAR. 98. — 3) f. Flacourtia cataphracta
RATNAM. im ÇKDr.

वेषदान (1. वेष्ट + दान) m. eine best. Pflanze, = सूर्यशोभा (vgl. दिव्य-
वस्त्र) ÇABDAK. im ÇKDr. वेश° gedr.

वेषधारिन् (1. वेष्ट + धा°) 1) adj. am Ende eines comp. die Tracht —,
den Anzug von — tragend: तापसीवेषधारिणी R. 5, 18, 21. स्त्रीवेषधारी
पुरुषः AK. 1, 1, 1, 11. — 2) m. a) ein Asket der Tracht nach, ein heuch-
lerischer Asket ÇABDAR. im ÇKDr. गङ्गापुत्रस्य कन्यायां वीर्येण वेषधा-
रिणः। बभूव वेषधारी (so ist zu lesen) च पुत्रो योगी (पुङ्गी ÇKDr. u. d.
W.) प्रकीर्तितः || Verz. d. Oxf. H. 22, a, 6, 7.

वेषवत् (von 1. वेष्ट) adj. gut angezogen, — gekleidet KĀM. NITIS. 5,
17. सुवेषवान् (besser) st. स वेषवान् Comm.

वेषवार = वेषवार H. 417. RĀJAM. zu AK. nach ÇKDr.

वैषम्यि und °म्यी adj. etwa schön geschmückt in einer Formel TS. 3,
3, 2, 5. 4, 4, 1, 3. 5, 3, 6, 3. ÇAT. Br. 8, 3, 8, 3.

वेष्टिन् (von 1. वेष्ट) adj. am Ende eines comp. eine Tracht —, einen
Anzug habend: विकृत° BHĀG. P. 9, 8, 5. हम्° sich ein falsches Aus-
sehen gebend 7, 3, 27.

वेष्ट्क m. Schlinge zum Erwürgen ÇAT. Br. 3, 8, 1, 15. KĀTJ. Çr. 6, 3, 19.
— Vgl. वेष्ट.

वेष्ट, वेष्टते Dhātup. 8, 2 (वेष्टने); in der ältesten Sprache erscheinen
auch Formen von विष्ट. 1) sich winden —, sich schlängeln um: यस्य
मन्दाकिनी चिरमवेष्टत पादमूले SĀH. D. 344, 5. sich hängen —, kleben
an (loc.): मयि ते वेष्टतां मनः AV. 6, 102, 2. — 2) sich häuten (sich neu
kleiden): वेष्टमान इवोर्गः R. 7, 86, 3.

— caus. aor. अविवेष्टत् und अवेष्टत् P. 7, 4, 96. Vop. 18, 2. partic.
वेष्टित = वलपित, रुद्ध u. s. w. AK. 3, 2, 40. H. an. 3, 305. MED. t. 160.
HALĀJ. 4, 27. समस्तद्वेष्टितः परिवृत उच्यते P. 4, 2, 10, Schol. 1) überzie-
hen, umwindern umwickeln, umkleiden, bekleiden, umlegen, umstellen,
umringen, umzingeln, einschliessen: वासोभिर्वृषो वेष्टितः ÇAT. Br. 5, 2,
1, 5, 3, 1, 11, 11, 2, 6, 7. TBR. 1, 3, 1, 3. उल्लीषेण शिरो वेष्टयते PĀR. GRHJ.
2, 6. ĀÇV. Çr. 5, 12, 7. LĀTJ. 2, 6, 2. KĀTJ. Çr. 25, 10, 7. KAUC. 16. वेष्टित-
शिरम् M. 3, 238 (= MBH. 13, 4288). वस्त्रेण वेष्टितं कृत्स्नम् WEBER, KRISHNĀG.
278. वस्त्रवेष्टित Spr. 2225. पीताम्बरवेष्टित VARĀH. BRH. S. 24, 18. वे-
ष्टितः खर्चमणा 74, 13. BRH. 27 (23), 4. वस्त्रेण वेष्टयित्वाङ्कितं शिरः KA-
THĀS. 13, 152. अन्धोऽन्यकेशपाशवेष्टितान्। कृत्वा 49, 149. सप्ताश्वत्थस्य प-
क्षाणि तावत्सूत्रेण वेष्टयेत् JĀG. 2, 103. आन्त्रवेष्टितसर्वाङ्गी HARIV. 14379.
कलशाः सितसूत्रवेष्टितग्रीवाः VARĀH. BRH. S. 48, 37. WEBER, KRISHNĀG.
302, N. 2. R. 3, 32, 12. अवेष्टयत् लाङ्गलं शीर्षैः कार्पासिकैः पटैः 5, 49, 5.
36, 138. RĀGĀ-TAR. 2, 88. पाशवेष्टिताः 3, 24, 4, 1. (सर्पाः) वेष्टयत्तः परस्पर-
म्। पुच्छैः शिरोभिश्च MBH. 1, 2036. 1800. fg. 8, 2594. HARIV. 11099 (S. 793).
10873. R. 7, 28, 30. RAGH. 11, 59. KATHĀS. 63, 178. 63, 119. VARĀH. BRH.
3, 3. fgg. 27 (23), 12. ग्रीवायां वेष्टयित्वैव (sc. करेण) स ग्रीवां हस्तमैकत
MBH. 7, 1153. वाससावेष्टयद्गले (sc. तम्) KATHĀS. 61, 262. मम। पुष्पदा-
म्ना वेष्टयित्वा कण्ठे (कण्ठम्?) HARIV. 7241. वल्ली वेष्टयते वृत्तम् MBH. 12,
6833. ह्रिमवृष्टयः। वेष्टयति तान्धोरान्दित्यान् HARIV. 2393. 2394. काशकार
इवात्मानं वेष्टयन् so v. a. sich einspinnen MBH. 12, 12449. ÇĀMĀ. zu BRH.
ĀR. UP. S. 259. पुष्पवेष्टिशाखायै: rund um besetzt MBH. 2, 801. वेष्टितं
मेरुशिखरैः सतोयमिव तोयदम् R. 5, 45, 13. शुष्ककाष्ठैस्तृणैर्वेष्ट्य सर्वतः प-
र्वतातमम् HARIV. 5316. पितृवनसुमनोर्भवेष्टितं मे शरीरम् MBH. 137, 9.
VARĀH. BRH. S. 77, 2. BHĀG. P. 3, 30, 26. 10, 6, 33. MĀRK. P. 43, 68. Verz.
d. Oxf. H. 103, b, 29. PAÑĀR. 1, 7, 34. गोपगोपीकदम्बैश्च वेष्टिते (रासम-